The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 7 | July 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

मुस्लिम महिला की शिक्षा में लैंगिक अंतर

डॉ कीर्ति सिंह
मार्गदर्शक, शिक्षा विभाग, वी.एम.ओ. यू ., कोटा, राजस्थान
रेहाना बी
रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग, वी.एम.ओ. यू ., कोटा, राजस्थान
Email: rehana.education@vmou.ac.in

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
मुस्लिम महिला, शिक्षा, लैंगिकअंतर, जेंडर|

ABSTRACT

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति शिक्ष धातु से हुई है, जिसका अर्थ है | सीखना, शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है, जो निरंतर हमारे जीवन के साथ चलती रहती है | शिक्षा हमें सुव्यवस्थित और सभ्य जीवन जीना सिखाती है | शिक्षा के द्वारा हम अपने व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं | व्यवहार में आए परिवर्तन से हम परिस्थितियों के साथ अच्छे से सांमजस्य से कर पाते हैं | मनुष्य चाहे, छोटा बच्चा हो या कोई परिस्थिति हो सबसे सीखता रहता है | सीखना ही हमारे जीवन का उद्देश्य रहता है | शिक्षा हमारे शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक गुणों का निर्माण करती है | हमें सत्य और असत्य में अंतर पैदा करना सिखाती है | शिक्षा हमें एक अच्छा नागरिक तैयार करने में मदद करती है | परंपरावादी विचारधारा से मुस्लिम महिलाओं को शिक्षा में आगे बढ़ाने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है | मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक की स्थिति कहीं पर तो अच्छी होती है | कहीं पर बहुत दयनीय है | पुरानी विचारधाराओं और रीति रिवाज़ो के कारण शिक्षा प्राप्त करने मुस्लिम महिलाओं को अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ने पड़ती है | इसके अनेक कारण है, जिनमें गरीबी, शिक्षा, माता-पिता की पुरानी सोच और लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को ज्यादा महत्व देना | मुस्लिम समाज में लड़कियों और लड़कों में भी ज्यादा भेदभाव किया जाता है | लड़कों को हर काम में आगे रखकर उनका

ज्यादा महत्व देते है क्योंकि हमारा समाज एक पितृसत्तात्मक समाज है जहाँ पर सिर्फ पुरुषों का शासन होता है | पित्तसत्तात्मक समाज मुस्लिम महिलाओं को अपनी जंजीर में जकड कर रखता है जहाँ पर मुस्लिम महिलाओं को चार दीवारी में रखा जाता है | ऐसा माना जाता है या कह सकते कि परिवार वालों की पुरानी सोच होती है जिसमें मुस्लिम महिलाओं को घर के कामकाज करना ही जरूरी समझा जाता है | शिक्षा में उनको आगे बढ़ने से रोका जाता है और यह भी सोचा जाता है कि अगर एक मुस्लिम महिला पद लिख जाएगी तो अपने घर परिवार पर ध्यान नहीं देगी | अपने पति और बड़ों की इज्जत नहीं करेगी इसी सोच की वजह से मुस्लिम महिला आगे शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती है जबकि लड़कों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाता है | हमारे समाज का पिछड़ापन भी मुस्लिम समाज की सोच पर हावी है हम समाज में हो रहे अपराधों के डर से भी मुस्लिम महिलाओं को आगे पढ़ने से रोकते हैं |

जेंडर शब्द से तात्पर्य-

जहाँ पर स्त्री और पुरुष जाति का भेद हो क्योंकि पुरुष और स्त्री को जेंडर के माध्यम से ही जाना जाता है, जो स्त्री और पुरुष के बीच के अंतर को स्पष्ट करता है | हमारे समाज को कायम रखने के लिए स्त्री और पुरुष अपनी-अपनी जिम्मेदारियांँ निभाते हुए व्यवहार व गुणों के द्वारा अपनी एक अलग पहचान बनाते हैं |

शिक्षा और जेंडर अंतर

शिक्षा में जेंडर अंतर एक विशेष वर्ग को प्रदर्शित करता है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हमारे समाज में पुरुषों को अलग दृष्टि से देखा जाता है | पितृसत्तात्मक समाज होने के कारण पुरुषों का दर्जा स्त्रियों से कहीं ज्यादा होता है जहां पर स्त्रियों को शारीरिक और मानसिक शोषण का शिकार होना पड़ता है | शिक्षा के द्वारा स्त्रियों को उनके अपने अधिकारों के प्रति जागरूक कर सकते हैं उनके निर्णय निर्णय की क्षमता और उन्हें आत्मनिर्भर बन सकते हैं | शिक्षा के द्वारा समाज में हो रहे पुरुष और स्त्री के भेदभाव को काम किया जा सकता है ताकि स्त्री और पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चल सके जेंडर असमानता के कारण बच्चों में जीवन की शुरुआती दौर से भेदभाव किया जाता है जिससे लड़कियों में हीन भावना पैदा होती है | पित्तसत्तात्मक समाज में विचारों, परंपराओं, रीति रिवाज़ो के कारण लड़कियों का विकास प्रभावित होता हैं | शिक्षा के द्वारा हम भेदभाव को काम करके लड़के और लड़कियों को एक अच्छा सामाजिक पारिवारिक वातावरण प्रदान कर सकते हैं |

ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में अंतर-

ग्रामीण क्षेत्र की बात की जाए तो हमारे मन मस्तिष्क में एक ऐसी छवि बन जाती है जहाँ न शिक्षा और न सुविधा संपन्न साधन, पुराने रीति रिवाज परंपरा और पिछड़ापन ही हमें नजर आता है | ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता दर पहले से ज्यादा बढ़ी है पर शहरी क्षेत्र में साक्षरता दर गाँव की अपेक्षा ज्यादा होती है | ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों को साक्षर करने के प्रति इतना रुझान नहीं होता है उनको सिर्फ घर की चार दिवारी तक ही सीमित रखा जाता है | शहरी क्षेत्र में सुविधा युक्त साधन होने के साथ-साथ जागरूकता भी होती है | ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में महिलाएं ज्यादा पढ़ी-लिखी और अपने घर परिवार की देखभाल के साथ-साथ स्वयं के निर्णय लेने में भी सक्षम होती है |

साक्षर और निरक्षर महिला पुरुष अनुपात-

जो व्यक्ति पढ़ और लिख सकता है उसे साक्षर माना जाता है | जो व्यक्ति न पढ़ सकता है न लिख सकता है उसे निरक्षर माना जाता है | 2011 की जनगणना के अनुसार देश में पहले की अपेक्षा साक्षरता दर में वृद्धि हुई है | भारत देश में पुरुष साक्षरता दर 74.04% की वृद्धि हुई है और महिला साक्षरता दर में 65.46% की वृद्धि हुई है | भारत देश में सबसे ज्यादा साक्षरता दर केरल की है जहाँ पर साक्षरता दर 93.91% है | भारत देश में पुरुषों की अपेक्षा महिला साक्षरता दर कम ही रहती है उसका एक कारण पारिवारिक जिम्मेदारियाँ तथा महिलाओं का खुद के प्रति संकोचशील व्यवहार भी है |

मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति-

प्राचीन भारतीय समाज से लेकर अब तक अगर हम मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का आकलन करते हैं तो यह पता चलता है कि प्राचीन काल में मुस्लिम समुदाय के लोग अपनी घर की लड़कियों को घर की चार दीवारी में ही शिक्षा देना उचित समझते थे | उनकी प्राथमिक स्तर की शिक्षा घर पर ही करवाना तथा उन्हें आगे पढ़ने के लिए बाहर न जाने देना | लड़कियों को आगे पढ़ने न जाने देने के पीछे उनके रूढ़िवादी विचार और उनकी परम्परायें हैं, जहाँ पर यह माना जाता है कि महिलाएँ, लड़कियाँ आगे पढ़ कर क्या करेंगी | समय पर शादी कर दो और अपने घर परिवार की जिम्मेदारी संभाल ले यही विचार महिलाओं की शिक्षा में सबसे बड़ी रुकावट बना है | मुस्लिम वर्ग के पुरुष इस्लाम धर्म की दुहाई देते हैं और अपने घर की महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं करते हैं | महिलाओं की स्वतंत्रता उनके विकास में रुकावट का कारण बनती है पर आजादी के बाद से मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा को लेकर जागरूकता आई है | **ज़ोया हसन** "मुस्लिम औरतों का हिंदुस्तान में आगे न बढ़ने तथा शिक्षा प्राप्त न करने का मूल कारण गरीबी है | मुस्लिम औरतों के शैक्षिक स्तर में कुछ हद तक सुधार हुआ है लेकिन इतना नहीं जितना की जनसंख्या के हिसाब से उनकी संख्या है | सामाजिक और आर्थिक पहलुओं को नज़र अंदाज़ कर

मुस्लिम महिलाओं की स्थिति को ठीक से नहीं समझा जा सकता |" समय के साथ हो रहे परिवर्तन से आजादी के बाद से भारतीय मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा को लेकर सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन हो रहे हैं | मुस्लिम महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति सजक रहने लगी है | मुस्लिम महिला घर संभालने के साथ-साथ अपनी नौकरी पेशा जीवन को भी बेहतर तरीके से संभाल रही है | मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होना शुरू हुए उनकी मानसिकता में आए विचारों के प्रति वह सजग रहने लगी है | आज की मुस्लिम महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन में अग्रसर हो रही है |

सरकार द्वारा उठाए गए कदम ; सरकार के द्वारा महिलाओं को शिक्षा के प्रति समय -समय कई योजनाएं बनाई गई है | जिसमें महिलाओं को प्राथमिकता दी है |

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना -

इस अभियान की शुरुआत 22 जनवरी 2015 में प्रधानमंत्री द्वारा की गई थी | सरकार कन्या शिशु के प्रति समाज में बदलाव लाने का प्रयास कर रही है| इस अभियान के द्वारा शिशु लिंग अनुपात में कमी को रोकने तथा महिला सशक्तिकरण दर्शाया गया है | यह योजना तीनों मंत्रालय महिला और बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्रालय और मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा चलायी जा रही है | यह अभियान निम्न लिंगानुपात वाले 100 जिलों में प्रारम्भ किया गया जिसे बढ़ाकर 161 जिलों में कर दिया गया है | महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए कई कानून बनाए हैं जो लिंग भेद को समाप्त करते हैं तथा महिलाओं को उचित दिशा निर्देश देते हैं | बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ अभियान को जागरूक करने के लिए नुक्कड़ नाटकों का आयोजन शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में किया जा रहा है जिससे की लोगों में जागरूकता आये | इस अभियान का उद्देश्य बालिकाओं को सही गलत की जानकारी देना, शोषण से बचाना, उनकी शिक्षा सुनिश्चित करना, सामाजिक और आर्थिक रूप से सक्षम बनाना, जीवन में आने वाली कठिनाइओं का सामना करना सीखना है | पक्षपात लिंग चुनाव प्रक्रिया का उन्मूलन करना, बालिकाओं का अस्तित्व सुरक्षित करना है |

वित्तीय सहायता और छात्रवृत्ति-

सरकार के द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय यानी मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता हेतु छात्रवृत्ति योजना, निःशुल्क कोचिंग योजनाएं चला रखी है जो मुस्लिम महिलाओं को शिक्षा में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है | इस योजना के द्वारा सरकार मुस्लिम महिलाओं को बेहतर शिक्षा प्रदान करना तथा आर्थिक सहायता

देना है | इस योजना के द्वारा जो बालिकाएँ या महिलाएँ बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़ देती है, उनको अपनी शिक्षा पूरी करने का अवसर प्राप्त होने लगा है | जब आर्थिक सहायता मिलती है, तो अपने आप में एक आत्म विश्वाश भी जाग्रत होता है |

लिंग उत्तरदाई नीतियांँ -

सरकार द्वारा ऐसी तकनीक और नीतियां और दिशा निर्देश विकसित किए गए हैं जिससे महिलाओं में सशक्तिकरण और लैंगिक समानता को प्राथमिकता दी जा रही है | महिलाओं और पुरुषों की अपनी -अपनी जिम्मेदारियाँ होती है ,जो प्राथमिकताओं को जन्म देते है | केंद्रीय और राज्य सरकार द्वारा लिंग उत्तरदायी नीतियों के लिए बजट का विश्लेषण किया जाता है | इस बजट में लैंगिक समानता और मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण के सरकार वित्त पोषण प्रदान करती है | यह योजना महिलाओं और पुरुषों की अलग -अलग आवश्यकताओं, चुनौतियों और प्राथमिकताओं को समझ प्रदान करने मदद करती है | इसमें महिलाओं की भागीदारी, उनके द्वारा परामर्श, जन सुनवाई को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे महिलाये जागरूक हो और सोच समझ कर निर्णय ले | समान कार्य के लिए समान वेतन को बढ़ावा देना और कार्य -स्थल पर उनके साथ किसी भी तरह का भेदभाव न हो | महिलाओं की सुरक्षा के लिए सेनेटरी नैपकिन और स्वच्छ शौचालय उपलब्ध करना है ताकि मुस्लिम महिलायें अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सकें |

बुनियादी ढांचे का विकास -

सरकार के द्वारा लड़कियों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए सरकार अभियान चलाती है जो रूढ़िवादी और सामाजिक मापदंड शिक्षा में रुकावट पैदा करते हैं | इन अभियानों का उद्देश्य घरों और समूह के भीतर दृष्टिकोण में व्यवहार में परिवर्तन करना होता है | बुनियादी ढांचा भौतिक सुख सुविधाओं और अर्थव्यवस्था को दर्शाता है | शिक्षा एक गुणवत्ता पूर्ण जीवन जीने का तरीका होती है | सरकार भी स्कूलों में बुनियादी ढांचों में सुधार पर ज़ोर दे रही है | विशेष रूप से महिलाओं की भागीदारी के साथ स्कूलों के नामांकन, प्रबंधन, शौचालय के निर्माण में सुधार करके स्कूलों की गुणवत्ता में सुधार किया जा रहा है |

जेंडर बजटिंग पहल-

जेंडर बजटिंग महिलाओं को मुख्य धाराओं में लाने का लक्ष्य हासिल करना है | इसका उद्देश्य विकास का लाभ महिलाओं तक पहुँचाना जिसका फ़ायदा हर वर्ग की महिला को मिल सके | महिला एवं विकास मंत्रालय ने जेंडर बजटिंग के लिए नोडल एजेंसी के रूप में काम किया है इसे राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर लाने के लिए कई उपाय

किये है जेंडर बजटिंग के द्वारा आंतरिक और बाहरी क्षमता को सशक्त बनाना है ताकि यह नीतियों /योजनाओं और कार्यक्रमों द्वारा महिलाओं को मुख्य धारा में लाना है | (भारत 2016:829-830)

लिंग संवेदनशील पाठ्यक्रम और शिक्षण -

लिंग संवेदनशील पाठ्यक्रम और शिक्षक लैंगिक विभिन्नता को समाप्त करते हैं यह समावेशी शिक्षा और शैक्षिक वातावरण को सुविधापूर्ण बनाते हैं | गैर लाभकारी संगठन 'ब्रेकथ्रू' राज्य सरकार की शिक्षा प्रणाली में लिंग संवेदनशील पाठयक्रम को शामिल किया गया है | जिसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार कर लैंगिक समानता के मूल्यों का समावेश करके महिलाओ और लड़कियों को लैंगिक भेदभाव के खिलाफ जागरूकता लाना है | पितृसत्तात्मक में समाज शिक्षा के द्वारा ही परिवर्तन लाया जा सकता है | लैंगिक भेदभाव को कम करने के लिए लिंग संवेदी पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धतियां समाज में परिवर्तन करने में अपनी अहम भूमिका निभा सकती है | ब्रेकथ्रू का लिंग संवेदनशील पाठ्यक्रम सतत विकास के लक्ष्य (एस डी जी) 4 और 5 के लक्ष्य की पूर्ति करने में अपना योगदान देने में कारगर साबित हो रहा है | **सुनीता मेनन-** लिंग संवेदनशील पाठ्यक्रम को लॉन्च करने की पीछे की प्रेरणा के बारे में बताती है, "पितृ सत्तात्मक समाज में जन्मी महिलाओं को अपनी ज़िन्दगी के किए गए फैसलों पर नियंत्रण हासिल नहीं होता है, जिससे वह लैंगिक असमानताओं और भेदभाव का सामना करने के लिए मजबूर हो जाती हैं| आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत में 80% पुरुषों के मुकाबले 65 फ़ीसदी महिलाएं ही साक्षर है 23% लड़कियां यौवन तक पहुंचने तक ही स्कूल छोड़ देती हैं, 90 फ़ीसदी कभी जीवन में कभी न कभी यौन दुर्व्यवहार का सामना करती हैं, 60% लड़कियों की शादी 18 साल से पहले ही कर दी जाती है, 33 फ़ीसदी महिलाएं प्यार में हिंसा झेलती है | इसके अलावा भारत में कुल कार्य बल में महिलाओं की हिस्सेदारी 21 फ़ीसदी है, क्योंकि शिक्षा समाज की सोच में बदलाव लाने का एक मजबूत हथियार है, इसलिए हमने लैंगिक भेदभाव और असमानता को दूर करने तथा छात्र-छात्राओं को लैंगिक मुद्दों पर अधिक संवेदनशील बनाने के लिए लिंग संवेदनशील पाठ्यक्रम पेश किया गया है |"

अल्प संख्यक महिलाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास-

भारत में मुस्लिम समुदाय की सामाजिक,शैक्षिक और राजीतिक स्तर पर एक कमेटी की स्थापना की गयी है जिसे सच्चर कमेटी के नाम से जानते है | सच्चर कमेटी ने तथ्यों को उजागर करते हुए अपने आकड़ो के द्वारा यह बताया कि मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्तिथि ठीक नहीं है | इसी को मध्य नज़र रखते हुए (2012-2013) अल्प संख्यक महिलाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास योजना को शुरू किया गया | इसका उद्देश्य मुस्लिम महिलाओं को परस्पर

सशक्त बनाना ही नहीं है बल्कि समानता का अधिकार दिलाने के साथ- साथ आत्म निर्भर बनाना भी है | सभी स्तर के संस्थान, सरकारी प्रणालियाँ, बैंक के साथ कार्य व्यवहार के लिए जानकारी देना, ज़रूरत के साधन तथा तकनीकें उपलब्ध करा कर अल्प संख्यक मुस्लिम महिलाओं चाहे वह गाँव की हो या शहरी क्षेत्र की सभी की कुशल नेतृत्व क्षमता का विकास करना है |

गैर सरकारी संगठनों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग-

सरकार महिलाओं और युवाओं को शिक्षित बनाने के उद्देश्य से प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है | और अंतरराष्ट्रीय संगठन संस्थाओं के साथ सहयोग करती है यह साझेदारी लड़कियों को प्रभावी ढंग से प्रशिक्षण देने, कौशल विकास करने, ज्ञानवर्धक बातें बताने और उनके भविष्य में आने वाली हर समस्याओं को सामना करने, समान प्रवेश सुनिश्चित करने, लैंगिक का असमानता को दूर करना और भेदभाव वाली नीतियों को मिटाने के लिए है , ताकि मुस्लिम महिला अपने समाज मे बराबरी का दर्ज़ा हासिल कर सके |

तीन तलाक़ विधेयक -

मुस्लिम समाज में महिलाओं को सबसे ज्यादा डर तलाक़ से रहता है | बहुत सी पढ़ी लिखी और अनपढ़ औरतें इसी ख़ौफ़ में जीती है कि कब उनके शौहर द्वारा तलाक़ दे दिया जायेगा | पुरुष प्रधान समाज होने के कारण इस मौक़े का फ़ायदा उठाता है वह अपनी बीवी को तलाक़ के नाम पर डरा कर रखता है | शरीयत में एक साथ तीन तलाक़ देना मना है | लेकिन पुरुष कहीं भी इस बात का फायदा उठा कर अपनी बीवी को तलाक़ दे देता है | इस मामले को देखते हुए सरकार ने तीन तलाक़ कानून (तलाक़ -ए -बिद्दत) पर एक नया विधेयक 27 दिसंबर 2018 में इसे पारित कर दिया गया इस विधेयक को मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) नाम दिया गया | कोई भी मुस्लिम पुरुष अब एक साथ तीन तलाक़ नहीं दे सकता है | अगर वो एक साथ तीन तलाक़ देता है, तो उसको पुलिस गिरफ्तार कर सकती है | यह बिल मुस्लिम महिलाओं के संरक्षण के लिए बनाया गया है | विधेयक को पास करने के बाद से ही मुस्लिम महिलाओं में जागरूकता आयी है | यह सब शिक्षा को बढ़ावा देने की वजह से हुआ है |

मुस्लिम महिलाओं में जागरूकता -

आज़ादी से पहले मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा को लेकर किसी प्रकार की जागरूकता नहीं थी | महिलायें घर का काम और बच्चों को सँभालने तक ही सीमित थी जैसे- जैसे समय बदलता गया मुस्लिम महिलायें शिक्षा की तरफ

कदम बढ़ने लगी | परिवार की संकुचित सोच को बदलते हुए आज के इस युग के हर क्षेत्र में चाहे डॉक्टर, इंजीनियर, क्लर्क या फिर ऑफिस हो या संस्थान सभी जगह अपना एक मुकाम हासिल कर रही है | शिक्षा के द्वारा लड़केऔर लड़कियों के बीच भेदभाव भी कम हुआ है | लड़कियों को लड़कों के बराबर तालीम देने के साथ-साथ उनको अपने जीवन फैसले भी खुद लेने की स्वतंत्रता मिल रही है | सरकार के द्वारा किये गए प्रयासों से मुस्लिम महिला शिक्षा में बढ़ोतरी हो रही है | गाँव हो या शहर धीरे- धीरे मुस्लिम महिलायें अपने भविष्य के साथ- साथ अपने घर, परिवार और बच्चों के निर्णय लेने में सक्षम हो रही है | आज के दौर की मुस्लिम महिला अपने देश के बाहर जा कर भी अपनी पढ़ाई और नौकरी दोनों की ज़िम्मेदारी अच्छे से निभा रही है |

निष्कर्ष

मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा में लैंगिक अंतर को स्पष्ट करते हुए पता चलता है कि प्राचीन काल में और वर्तमान समय में मुस्लिम महिलाएँ शिक्षा के प्रति जागरूक हुई हैं | उनको अपने अधिकारों तथा स्वयं निर्णय लेने की क्षमता का विकास हुआ है | सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में भी अपना योगदान देते हुए आगे बढ़ रही हैं अपने रीति-रिवाज और परंपराओं का पालन करने के साथ-साथ स्वयं के भविष्य को भी महत्व देने लगी है| सरकार द्वारा किए गए प्रयासों के माध्यम से मुस्लिम महिलाएँ अपनी शैक्षिक स्तर में आए अंतर को कम कर रही हैं वह अपने भविष्य को सुधारने के साथ-साथ अपने बच्चों का भी भविष्य सुनहरा बना रही है | मुस्लिम महिलाओं को शिक्षक शैक्षिक संस्थानों में भी इतनी पहुंच नहीं होती है कि वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर सके | कहीं पर पारिवारिक सहयोग न मिल पाने के कारण भी पीछे जाती हैं | आज के समय में मुस्लिम महिला भी शिक्षित होकर समाज तथा लोगों में बीच संपर्क में आ रही है | अब वर्तमान समय में मुस्लिम आबादी क्षेत्रों में भी सऊदी अरब देशों में मुस्लिम महिलाओं स्वतंत्र रूप से नौकरी कर गाड़ी चलाने की स्वतंत्रता तथा कई प्रकार की छूट मिलने लगी है | शिक्षा पर बहुत अधिक बल दिया जा रहा है | वर्तमान समय में औधोगिक विकास के साथ -साथ सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहे है | मुस्लिम महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार तो नहीं मिले है पर शिक्षा के कारण बदलाव आ रहा है | महिलाएँ शिक्षा के प्रति जागरूक होने लगी है | परिवार, समाज, राष्ट्र में निर्णय लेने की भागीदारी में शामिल होने लगी है | समाज में हो रहे परिवर्तन तथा सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाएँ काफी जागरूकता आई है | लड़कियाँ और महिलाएँ भी स्वयं अपने हक़ के लिए लड़ सके यह तब ही संभव होगा जब वह अपने अधिकारों को जानकर जागरूक होंगी यह मुस्लिम महिला शिक्षा के द्वारा ही संभव होगा | मुस्लिम महिलाओ को शिक्षित करके ही उनकी रूढ़िवादी सोच में परिवर्तन ला सकते है | शिक्षा ही उनको अपनी एक अलग पहचान बनाने में सहायक है | शिक्षा वह शस्त्र है, जो हमारे समाज और समाज में रहने वाली महिलाओं को

सम्मान पूर्वक जीवन प्रदान कर सकती है | मुस्लिम महिलाओं को अपने घरों और समुदायों की चार दीवारी से बाहर निकल कर उनके जीवन और रहन- सहन की दशा में सुधार ला कर एक गुणवत्ता पूर्ण जीवन जीने हेतु प्रेरित कर उज्जवल भविष्य प्रदान करना है |

सन्दर्भ- ग्रन्थ सूची

योजना, जनवरी 2016 अंक, लोधी रोड, नई दिल्ली|

प्रोग्राम ऑफ़ एक्शन : नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन,1986

शहीदा लातिफ- मुस्लिम वूमेन इन इंडिया पॉलिटिकल एंड नई दिल्ली |

अमर उजाला- 8 अक्टूबर 2016 (इलाहाबाद संस्करण)

हदीस - सहीह मुस्लिम

जोया हसन "हंस", भारतीय मुसलमान, अगस्त 2013

रशीदी यासमीन, मेरे मुल्क में औरतों का कोई नाम नहीं, द वायर 2019

शहिद मुर्तजा- इस्लाम में नारी का अधिकार |

द हिंदू नई दिल्ली 2017(दिल्ली संस्करण)

हिंदुस्तान -12 फ़रवरी 2017 (लखनऊ संस्करण)

जनसत्ता- फरवरी 2017

दैनिक जागरण -13 फरवरी 2017(इलाहाबाद संस्करण)

नारीवादी राजनीतिक- संघर्ष एवं मुद्दे साधना आर्य :- हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली |

जैन, एस. (2003)- जेंडर इक्वलिटी इन एजुकेशन, कम्युनिटी बेस्ड इनीशिएटिव इन इंडिया।

भारत में स्त्री असमानता : एक विमर्श, डॉ. गोया जोशी -हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली वि.वि.दिल्ली - 110007 |

अग्निहोत्री, रविंद्र (2006) -आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याएं और समाधान, जयपुर राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी |

जलालुद्दीन -महिला इस्लामी समाज में मरकजी मकतबा इस्लामी, नई दिल्ली |

http:/hi.m.wikipedia.org